खण्ड-12, अंक-1, वर्ष-2024, मु0प्र0 93-97
D.O.I.: https://doi.org/10.22445/avsp.v12i1.15
SJIF (2024) : 8.287

Contribution of teachers towards inclusive education

Abha Sharma
Sam Higginbottom University of Agricultural Technology and Sciences
Prayagraj-211 007, U.P., India
abha43866@gmail.com

Received: 28-10-2024, Accepted: 21-12-2024

Abstract- The National Education Policy-2020 has brought a major change in the Indian education system, which aims to ensure equal and quality education for all sections. The main focus of inclusive education under this education policy is to provide equal opportunities to all students, regardless of their social, economic, cultural or physical background. In this, emphasis has been laid on bringing children with special needs, students with disabilities and marginalized groups of the society into the mainstream of education. The National Education Policy-2020 makes provision for specially training teachers in this direction. In this, teacher education institutions have been instructed to prepare special courses, so that teachers are able to adopt the principles and practices of inclusive education. In addition, continuous development and training programs have also been arranged for teachers, so that they remain aware of and use the latest teaching methods and techniques. The attitude and behavior of teachers also play an important role in the success of inclusive education. Inclusive classrooms require teachers to have patience, empathy, and flexibility to meet the diverse needs of all students. Therefore, in the context of the New Education Policy-2020, the contribution of teachers is central to achieving the goals of inclusive education, and for this their continuous development and training is very important.

Key words- Inclusive education, Assistive technology, personal Adaptation, positive Attitude.

समावेशी शिक्षा की दिशा में शिक्षकों का योगदान

आभा शर्मा
सैम हिगिनबॉटम कृषि प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान विश्वविद्यालय,प्रयागराज–211 007, उ0प्र0, भारत
abha43866@gmail.com

सार– नई शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में एक बड़ा बदलाव कदम है, जिसका उद्देश्य सभी वर्गो के लिए समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करना है। इस शिक्षानीति के तहत समावेशी शिक्षा का मुख्य फोकस सभी विद्यार्थियों को, चाहे वे किसी भी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक या शारीरिक पृष्ठभूमि से आते हों, समान अवसर प्रदान करना है। इसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चों, विकलांग छात्रों एवं समाज के हाशिए पर रह रहे समूहों को शिक्षा की मुख्यधारा में लाने पर जोर दिया गया है। नई शिक्षा नीति 2020 शिक्षकों को इस दिशा में विशेष रूप से प्रशिक्षित करने का प्रावधान करती है। इसमें शिक्षक शिक्षा संस्थानों को विशेष पाठ्यक्रम तैयार करने का निर्देश दिया गया है, जिससे शिक्षक समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों और व्यवहारों को अपनाने में सक्षम हो सकें। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों के लिए निरंतर विकास और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की भी व्यवस्था की गई है, ताकि वे नवीनतम शिक्षण विधियों और तकनीकों से अवगत रहें और उनका उपयोग कर सकें। शिक्षकों का दृष्टिकोण और व्यवहार भी समावेशी शिक्षा की सफलता में अहम भूमिका निभाते हैं। समावेशी कक्षाओं में शिक्षकों को धैर्य, सहानुभूति, और लचीलेपन की आवश्यकता होती है ताकि सभी छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।अतः नई शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में शिक्षकों का योगदान समावेशी शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में केंद्रीय है, और इसके लिए उनका सतत् विकास एवं प्रशिक्षण अति आवश्यक है।

बीज शब्द– समावेशी शिक्षा,सहायक प्रौद्योगिकी, व्यक्तिगत अनुकूलन, सकारात्मक दृष्टिकोण।

शोध समीक्षा

1. **परिचय**– शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति के विकास व समाज के समग्र उत्थान का आधार है। समावेशी शिक्षा का लक्ष्य सभी बालकों को उनकी क्षमता पृष्ठभूमि, भौतिक स्थिति या मानसिक स्थिति की परवाह किए बिना समान अवसर और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। भारत में शिक्षा प्रणाली को अधिक समावेशी और विविधतापूर्ण बनाने के उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति (राष्ट्रीय शिक्षा नीति) 2020 को लागू किया गया है। यह नीति शिक्षा क्षेत्र में बड़े सुधारों के साथ समावेशी शिक्षा के महत्व को रेखांकित करती है और शिक्षकों की भूमिका को अत्यधिक महत्वपूर्ण बनाती है।शिक्षक न केवल शिक्षा के स्रोत होते हैं, बल्कि वे सामाजिक समता और समावेशिता के संवाहक भी होते हैं। वे विविध पृष्ठभूमियों और विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के बीच एक सेतु का कार्य करते हैं, जिससे वे न केवल शैक्षणिक ज्ञान अर्जित कर पाते हैं, बल्कि अपने व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में भी सफल हो सकते हैं। समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों को लागू करने में शिक्षकों की सक्रिय भूमिका और योगदान अत्यावश्यक है। इसके तहत, उन्हें न केवल पारंपरिक शिक्षण पद्धतियों को पुनःनिर्धारित करना होगा, बल्कि एक अधिक संवेदनशील और सहयोगी वातावरण भी तैयार करना होगा।इस शोध पत्र में, हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में समावेशी शिक्षा के महत्व को समझने का प्रयास करेंगे और यह जानेंगे कि कैसे शिक्षक इस दिशा में योगदान देकर एक समावेशी और समतावादी शिक्षा प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं। इसके साथ ही, यह अध्ययन समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षकों को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, और किस प्रकार वे अपनी भूमिका को और प्रभावी बना सकते हैं, इस पर भी प्रकाश डालेगा।

2. **आवश्यकता एवं महत्व**– समावेशी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है कि प्रत्येक छात्र को समान अवसर मिले। इसके अंतर्गत शिक्षकों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि वे ही ऐसे वातावरण का निर्माण करते हैं जिसमे प्रत्येक छात्र को अपनी क्षमताओं के अनुसार सीखने का मौका मिलता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 शिक्षा को समावेशी और समतामूलक बनाने पर जोर देती है, और इसके लिए शिक्षकों को विविध छात्रों की शैक्षिक और व्यक्तिगत आवश्यकताओं को समझने के लिए सक्षम बनाने की आवश्यकता है। एक शिक्षक का सकारात्मक दृष्टिकोण छात्रों को प्रेरित करता है और उन्हें आत्मविश्वास से भरता है। शिक्षक न केवल पाठ्यक्रम को अनुकूलित करने का काम करते हैं, बल्कि वे भेदभाव रहित वातावरण भी सुनिश्चित करते हैं। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 शिक्षकों के प्रशिक्षण पर विशेष ध्यान देती है, ताकि वे विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के साथ सही ढंग से संवाद कर सकें और उन्हें बेहतर तरीके से शिक्षित कर सकें। समावेशी शिक्षा की दिशा में शिक्षकों का योगदान इसलिए आवश्यक है क्योंकि वे ही छात्र के विकास की आधारशिला रखते हैं, जो एक समतामूलक समाज के निर्माण में सहायक होता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अनुसार, शिक्षकों काउत्तरदायित्व केवल शिक्षा देना नहीं है, अपितु एक ऐसा वातावरण बनाना भी है जहाँ सभी छात्र समान रूप से सुरक्षित और सम्मानित महसूस करें। समावेशी शिक्षा में शिक्षकों का योगदान इस दृष्टिकोण से अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि वे छात्रों को विविधता और समावेशन के महत्व को सिखाते हैं। इसके साथ ही, वे छात्रों में सामाजिक और भावनात्मक कौशल विकसित करने में भी सहायक होते हैं, जिससे वे एक समावेशी समाज के सदस्य बन सकें। शिक्षकों का समर्पण, उनकी संवेदनशीलता, और प्रशिक्षण छात्रों के शैक्षिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार, शिक्षकों का समावेशी शिक्षा में योगदान न केवल शैक्षिक दृष्टिकोण से, बल्कि एक व्यापक सामाजिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके माध्यम से समाज में समानता, सहयोग, और समरसता को बढ़ावा मिलता है।

3. **सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण**– समावेशन शिक्षा में अध्यापकों के उत्तरदायित्व एवं भूमिकारू एक समीक्षा का अध्ययन कर पाया कि समावेशी शिक्षा में एक अध्यापक अपने छात्रों को शारीरिक, मानसिक, मनोवैज्ञानिक व भावात्मक रुप से मजबूत बनाता है ताकि सभी छात्रों का पूर्ण विकास हो सके।[1] अध्यापक सदैव ही अपने छात्रों के पूर्ण विकास की कल्पना करे उनमें किसी प्रकार का भेद–भाव न हो वह अपने छात्रों व समाज के साथ न्याय कर पायेगा और अपने देश का मान सम्मान उंचा कर सकेगा। समावेशी कक्षाओं में सहायक प्रौद्योगिकी के कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियों और उनके संभावित समाधानों पर भी अध्ययन किया गया है। यह विशेष रूप से श्रवण बाधित बच्चों के लिए महत्वपूर्ण है। स्टुअर्ट वुडकॉक, उमेश शर्मा, पर्ल सुब्बन, एलिजाबेथ हिचेस ने शिक्षक आत्म–प्रभावकारिता और समावेशी शिक्षा पद्धतियाँ एवं समावेशी पद्धतियों के साथ शिक्षकों की सहभागिता पर पुनर्विचार के अध्ययन में पाया कि उच्च और निम्न प्रभावकारिता वाले शिक्षकों की समावेशी शिक्षा के बारे में समान वैचारिक समझ थी, लेकिन उनके शिक्षण अभ्यास अलग–अलग थे।[2] समावेशी शिक्षा को बढ़ावा देने में शिक्षक की भूमिका के अध्ययन में पाया गया है कि शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण है, जहाँ वे सीखने में कठिनाई वाले बच्चों को बढ़ावा देने, भागीदारी करने और कम उपलब्धि को कम करने में मदद करते हैं। समावेशी शिक्षा को बढ़ाने के लिए कुछ अभ्यास लागू किए गए हैं, जैसे विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों को उपयुक्त सहायता और सेवाएँ, विचार–विमर्श, शैक्षिक कार्यक्रम तथा शिक्षक तैयारियों में विकलांगों को संबोधित करना।[3]

4. **शोध के उद्देश्य**– शोध के उद्देश्य निम्नवत हैं–

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों का अध्ययन करना।
2. शिक्षकों की भूमिका और योगदान का अध्ययन करना।
3. समावेशी शिक्षा की विशेषताओं का अध्ययन करना।

5. **शोध प्रविधि**– इस शोध पत्र में शोध प्रविधि के रूप में 'सामग्री विश्लेषण' का प्रयोग किया गया है।

6. **समावेशी शिक्षा**– एक ऐसी शिक्षण प्रणाली है, जिसमें सभी प्रकार के बच्चों को एक ही कक्षा में शिक्षा दी जाती है, चाहे उनकी शारीरिक, मानसिक, या सामाजिक स्थिति कैसी भी हो। इसमें विशेष आवश्यकता वाले बच्चे जैसे– दिव्यांग, श्रवण बाधित, दृष्टिहीन, मानसिक विकास में पिछड़े बच्चे भी सम्मिलित होते हैं, ताकि वे समान अवसर प्राप्त कर सकें और मुख्यधारा की शिक्षा में भागीदार बन सकें। इस व्यवस्था का मुख्य उद्देश्य भेदभाव को खत्म कर हर बच्चे को एक समान सीखने का अवसर प्रदान करना है।[4] माइकल फिनग्रेस के अनुसार–समावेशी शिक्षा मूल्यों सिद्धांतों और अभ्यास ओं का एक समूह है जो सभी बालकों के लिए चाहे वह विशिष्टता रखते हो या नहीं रखते हो प्रभावशाली और अर्थपूर्ण शिक्षा की खोज करता है।[5]

7. **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और समावेशिता**– राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 शिक्षा में समानता और समावेशिता के महत्व को रेखांकित करती है। एनईपी 2020 सभी के लिए समान शिक्षा की परिकल्पना करती है, जिसमें लड़कियों और विकलांग बच्चों सहित हाशिए पर पड़े समूहों पर विशेष ध्यान दिया गया है। यद्यपि, शिक्षा में नीति के महत्वपूर्ण सुधारों के बावजूद, हम समावेशी शिक्षा को प्रभावी ढंग से लागू करने में लगातार चुनौतियों से जूझ रहे हैं।[6]

8. **समावेशी शिक्षा के सिद्धांत राष्ट्रीय शिक्षा नीति2020 के संदर्भ में**–राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का उद्देश्य एक ऐसा समावेशी और समान शिक्षा तंत्र विकसित करना है, जो सभी वर्गों के बच्चों को गुणवत्ता युक्त शिक्षा प्रदान कर सके। इसमें समावेशी शिक्षा के कई महत्वपूर्ण सिद्धांतों को प्रमुखता दी गई है, जिनका लक्ष्य सभी बच्चों को एक समान अवसर प्रदान करना है, चाहे उनका सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि कुछ भी हो।

9. **समावेशी शिक्षा के प्रमुख सिद्धांत**–समावेशी शिक्षा एक ऐसी शिक्षण प्रक्रिया है, जिसमें सभी छात्रों को बिना किसी भेदभाव के समान अवसर प्रदान किए जाते हैं। यह शिक्षा प्रणाली सुनिश्चित करती है कि समाज के हाशिये पर पड़े समूहों, जैसे विकलांग, आर्थिक रूप से पिछड़े, या अन्य हाशिये पर रखे गए वर्गों के बच्चों को भी समान रूप से शिक्षा प्राप्त हो। 2020 के संदर्भ में समावेशी शिक्षा के सिद्धांत विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो गए हैं, क्योंकि कोविड–19 महामारी ने शैक्षिक प्रणाली को गंभीर रूप से प्रभावित किया है और समाज में समानता पर विचारों को फिर से उभारा है।

9.1 **समान अवसरों की प्राप्ति**–समावेशी शिक्षा का पहला और सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है कि प्रत्येक छात्र को समान अवसर प्रदान किए जाएं। चाहे वह शारीरिक या मानसिक रूप से विकलांग हो, चाहे उसकी सामाजिक स्थिति कैसी भी हो, उसे शिक्षा प्राप्त करने के अवसर से वंचित नहीं किया जाना चाहिए। 2020 के दौरान, जब ऑनलाइन शिक्षा का प्रचलन बढ़ा, यह सिद्धांत और भी महत्वपूर्ण हो गया। विशेष रूप से विकलांग छात्रों या आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों के लिए डिजिटल उपकरणों और इंटरनेट की उपलब्धता ने समान अवसरों की मांग को और प्रासंगिक बना दिया।

9.2 **विविधता की स्वीकृति**–समावेशी शिक्षा का दूसरा महत्वपूर्ण सिद्धांत है कि स्कूलों और शिक्षण संस्थानों को विविधता को स्वीकार करना चाहिए और उसे बढ़ावा देना चाहिए। विभिन्न पृष्ठभूमि, क्षमता, भाषा, जाति, और लिंग के छात्रों को एक साथ शिक्षा देना समाज को भी एक स्वस्थ और सहिष्णु दृष्टिकोण प्रदान करता है। 2020 में, जब शारीरिक कक्षाओं के स्थान पर वर्चुअल कक्षाओं का संचालन हो रहा था, शिक्षकों और संस्थानों को यह सुनिश्चित करना पड़ा कि हर छात्र, चाहे उसकी परिस्थिति कैसी भी हो, अपनी शिक्षा में पूर्ण भागीदारी कर सके।

9.3 **समर्थनात्मक वातावरण का निर्माण**–समावेशी शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण सिद्धांत है कि छात्रों के लिए एक ऐसा वातावरण तैयार किया जाए, जो उनके सीखने के लिए सहायक हो। इसका तात्पर्य है कि न केवल शैक्षणिक सामग्री को समायोजित करना, बल्कि कक्षा के वातावरण को भी ऐसा बनाना, जिसमें सभी छात्र सहज महसूस करें। 2020 में, ऑनलाइन शिक्षा के दौरान, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण था कि छात्रों को तकनीकी समस्याओं, मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों, और शिक्षा से जुड़ी अन्य चुनौतियों में सहायता मिले।

9.4 **वैयक्तिकृत शिक्षा योजना**–हर छात्र की शिक्षा और सीखने की गति अलग होती है। समावेशी शिक्षा इस सिद्धांत को महत्व देती है कि

छात्रों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और क्षमताओं को ध्यान में रखकर शिक्षा दी जाए। 2020 में, विशेष रूप से विकलांग छात्रों के लिए, शिक्षा को उनकी व्यक्तिगत आवश्यकताओं के अनुसार ढालना और ऑनलाइन माध्यमों में सुधार करना एक बड़ी चुनौती थी।[7] शिक्षकों को हर छात्र की प्रगति का व्यक्तिगत रूप से ध्यान रखना और उसकी जरूरतों के अनुसार संसाधन प्रदान करना आवश्यक था।

9.5. **सामाजिक न्याय और समता का आदान–प्रदान**–समावेशी शिक्षा सामाजिक न्याय और समता के सिद्धांतों पर आधारित है। इसका उद्देश्य एक ऐसा समाज बनाना है, जहां सभी छात्रों को समान रूप से शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार हो और किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो। 2020 में, जब स्कूल बंद थे और ऑनलाइन शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिया जा रहा था, यह आवश्यक हो गया कि गरीब और वंचित छात्रों को भी उन्हीं सुविधाओं का लाभ मिले जो अन्य छात्रों को मिल रही थीं। सरकार और शैक्षणिक संस्थानों ने इस दिशा में कई प्रयास किए, लेकिन यह भी स्पष्ट हुआ कि शिक्षा के क्षेत्र में असमानताएं अभी भी बहुत व्यापक हैं।

10. **समावेशी शिक्षा में शिक्षक का योगदान: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में**–राष्ट्रीय शिक्षा नीति (राष्ट्रीय शिक्षा नीति) 2020 ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में समावेशी शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी बच्चे, चाहे उनकी पृष्ठभूमि, क्षमताएँ या विशेष आवश्यकताएँ जो भी हों, गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त कर सकें। इस संदर्भ में, शिक्षकों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे इस प्रक्रिया में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में इस बात पर जोर दिया गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं है, अपितु सामाजिक न्याय और समानता भी सुनिश्चित करना है।

11. **शिक्षण विधियों का विकास**–शिक्षक को विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करना चाहिए ताकि सभी बच्चों की विशेष आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके। जैसे–समूह गतिविधियाँ, परियोजना आधारित लर्निंग, और खेल आधारित शिक्षा को अपनाकर वे छात्रों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा दे सकते हैं।

12. **समर्थन और संवेदनशीलता**–समावेशी शिक्षा में, शिक्षकों को छात्रों के लिए एक सहायक वातावरण तैयार करना चाहिए। उन्हें यह समझना चाहिए कि हर बच्चा अलग है और उनकी सीखने की गति भी भिन्न हो सकती है। शिक्षकों को छात्रों की व्यक्तिगत जरूरतों को पहचानकर उन्हें आवश्यक समर्थन प्रदान करना चाहिए।

13. **सकारात्मक और समावेशी कक्षा का वातावरण**–शिक्षक को कक्षा में ऐसा वातावरण बनाना चाहिए जहां सभी छात्र स्वतंत्रता से अपनी राय व्यक्त कर सकें। एक समावेशी कक्षा का वातावरण छात्रों को आपस में सहयोग करने और एक–दूसरे से सीखने का अवसर देता है।

14. **माता–पिता और समुदाय के साथ सहयोग**–शिक्षक को माता–पिता और स्थानीय समुदाय के साथ सहयोग बढ़ाना चाहिए। यह आवश्यक है कि वे परिवारों को शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक करें और उन्हें छात्रों की शैक्षणिक प्रगति में भागीदार बनाएं।

15. **प्रशिक्षण और विकास**–राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में शिक्षकों के लिए निरंतर पेशेवर विकास पर जोर दिया गया है। शिक्षक को नई शिक्षण तकनीकों, विधियों और समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों से अवगत होना चाहिए। इसके लिए नियमित कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

16. **समावेशी शिक्षा की विशेषताएं**– समावेशी शिक्षा की विशेषताएं निम्नवत हैं–

16.1 **समावेशी शिक्षा केवल अशक्त बालकों के लिए नहीं**–समावेशी शिक्षा से अभिप्राय केवल विशिष्ट बालकों के लिए विशिष्ट शिक्षा तक सीमित रहना नहीं है बल्कि समावेशी शिक्षा का संबंध शिक्षा ग्रहण करने योग्य सभी बालकों से है।

16.2 **शिक्षा एक मौलिक अधिकार**–शिक्षा के मौलिक अधिकार को सैद्धांतिक और व्यावहारिक रूप में अपनाना समावेशी शिक्षा की एक प्रमुख विशेषता है शिक्षा की अन्य प्रजातियां भी बालकों की शिक्षा के अधिकार को मान्यता दी गई है लेकिन इस प्रकार की भावना सबसे अधिक शिक्षा पद्धति में निहित है।

16.3 **सबके लिए शिक्षा और सब के लिए विद्यालयों का प्रावधान होना**–समावेशी शिक्षा में सभी के लिए शिक्षा और सब के लिए विद्यालयों का प्रावधान होना चाहिए इस शिक्षा पद्धति में सामान्य और बाधित सभी बच्चों के लिए विद्यालयों में शिक्षा के प्रावधान रखे गए हैं शिक्षा सबके लिए होनी चाहिए ना की कुछ विशेष बालकों के लिए।

16.4 **पृथक्करण की विरोधी**–समावेशी शिक्षा के अंतर्गत शारीरिक रूप से बाधित बालक सामान्य बालक साथ–साथ सामान्य कक्षा में शिक्षा ग्रहण करते हैं दिव्यांग बालकों को कुछ अधिक सहायता प्रदान की जाती है इस प्रकार समावेशी शिक्षा दिव्यांग बालकों के पृथक्करण की विरोधी व्यावहारिक समाधान है।

16.5 **शिक्षा का समान अवसर**–इस शिक्षा का ऐसा प्रारूप दिया गया है जिससे विशिष्ट आवश्यकता वाले बालक को समान शिक्षा की सुविधा प्राप्त हुई और वह समाज में अन्य लोगों की भांति आत्मनिर्भर होकर अपना जीवन यापन कर सकें।[7]

17. **निष्कर्ष**–राष्ट्रीय शिक्षा नीति (राष्ट्रीय शिक्षा नीति) 2020 शिक्षा के क्षेत्र में एक ऐतिहासिक पहल है, जिसका उद्देश्य शिक्षा को समावेशी और समतामूलक बनाना है। समावेशी शिक्षा का उद्देश्य प्रत्येक विद्यार्थी को, चाहे उसकी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, या आर्थिक स्थिति कुछ भी हो, एक समान और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है। इस दिशा में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वे न केवल ज्ञान के प्रसारक होते हैं, बल्कि समाज और विद्यार्थियों के बीच सेतु का कार्य भी करते हैं। शिक्षक समावेशी शिक्षा को सफल बनाने के लिए अपनी शिक्षण पद्धतियों में विविधता और लचीलापन अपनाते हैं, जिससे हर विद्यार्थी अपनी क्षमताओं के अनुसार सीख सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने शिक्षकों को शिक्षण में नवीनतम तकनीकों और पद्धतियों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया है, जिससे वे अलग–अलग जरूरतों वाले विद्यार्थियों को बेहतर तरीके से सिखा सकें। इसके साथ ही, शिक्षकों को विशेष प्रशिक्षण प्रदान करने की बात कही गई है, ताकि वे विकलांग, सामाजिक रूप से वंचित, और आर्थिक रूप से पिछड़े छात्रों के साथ संवेदनशीलता और सहानुभूति के साथ कार्य कर सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के संदर्भ में यह भी महत्वपूर्ण है कि शिक्षक विद्यार्थियों को समावेशी वातावरण में शिक्षा दें, जहां किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो। शिक्षक अपने कक्षा में एक सकारात्मक और सहयोगात्मक वातावरण तैयार कर सकते हैं, जिससे सभी विद्यार्थी अपनी अलग–अलग प्रतिभाओं और क्षमताओं के साथ समृद्ध अनुभव प्राप्त कर सकें। इसके अलावा, उन्हें शिक्षा में नैतिकता और जीवन कौशल पर भी ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है, ताकि विद्यार्थी न केवल अकादमिक रूप से, बल्कि सामाजिक और व्यक्तिगत रूप से भी सशक्त बन सकें। समावेशी शिक्षा की दिशा में शिक्षकों का योगदान सिर्फ एक शिक्षण प्रक्रिया तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक बदलाव की प्रक्रिया भी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के तहत, शिक्षक न केवल शिक्षा के सुधारक हैं, बल्कि वे समाज के ऐसे निर्माता हैं जो प्रत्येक विद्यार्थी को एक समान अवसर प्रदान करने में सहायता करते हैं, जिससे समाज अधिक समावेशी और प्रगतिशील बन सके।

References

1. Kusum Devi (2018) Responsibilities and roles of teachers in inclusive education: A critical study. Science and Technology Journal, Volume 4.
2. Stuart Woodcock, Umesh Sharma, Pearl Subban, Elizabeth Hitches (2022) Teacher self-efficacy and inclusive education practices: Rethinking teachers' engagement with inclusive practices. teaching and teacher education
3. Monica Abrol (2023) Role of teacher in promoting inclusive education Research General Review General Publication
4. https://study.com/academy/lesson/inclusive-classroom-definition-strategies-environment.html
5. https://www.myeducational.in/2023/02/%20samaveshi%20shiksha.html
6. https://www.linkedin.com/pulse/inclusive-education-india-academic-exploration-oopkc
7. https://www.myeducational.in/2023/02/%20samaveshi%20shiksha.html